"हम हैं सरकारश्री के"

रमेशभाई के.पटेल, गोधरा

प्यारे सुन्दरसाथजी, याद करो वह समय जब हमें कुछ पता नहीं था, हम नाम के प्रणामी थे। उस समय श्रीराजजी के हुक्म से, पूज्यपाद सरकारश्री ने अपने सद्गुरु परमहंस श्रीरामरतनदास महाराजजी का आदेश और आर्शीवाद पाकर, श्रीबीतक साहेब और श्रीमुखवाणी की चर्चा करते हुए पूरे देश और विदेश के सुन्दरसाथ को नज़दीक लाकर प्रेम दिया, अपनी रहेनी और व्यवहार से सबको प्रभावित किया। उनके सानिध्य में हम सब एक थे। वह हम ही थे जिन्होंने एक होकर कंधे से कंधा मिलाकर जागनी की बुलन्द आवाज से पूरा प्रणामी आलम को हिला दिया था। सरकारश्री कहते थे कि "सुन्दरसाथजी, तुम केशरी सिंह हो, उठो, जागो और वाणी की गर्जना करो"। सरकारश्री ने पूरे देश में भ्रमण करके 6 माह की अवधि के लिए 1200 परायणों का बड़ा प्रोग्राम आयोजित किया था। सुन्दरसाथ को वाणी बीतक चर्चनी और संगीत से परमधाम का एक छोटा सा नज़ारा दिखाया था। सरकारश्री सुन्दरसाथ के दिलों में बस गये। देश और विदेश में भी जागनी शिविरों द्वारा सुवास फैलायी। पूरा प्रणामी समाज चौंक गया। सबको वाणी प्रचार के आगे झुकना पड़ा। गुजरात में सौ (100) से अधिक जागनी शिविर हुए। वाणी चर्चा से सुन्दरसाथ में जागनी की लहर चल पड़ी। सरकार श्री कहते थे कि "यह हमारी बीतक है, कथा कहानी नहीं है"। वाणी का पूरा जोश और आवेश के साथ पूरा तीन घंटों तक एक नजर और ध्यान के साथ हमें वाणी चर्चा सुनाते थे। गुजरात के गाँव–गाँव में सुन्दरसाथ खड़े हो गये और वाणी मंथन और चितवनी से श्रीराजजी–युगल–स्वरूप का आनन्द पाने लगे।

पू. सरकारश्री ने टीका सहित श्रीमुखवाणी और श्रीबीतक साहिब बड़े परिश्रम से हमको दी और परमधाम के पच्चीस पक्षों के बड़े नक्शे भी पूरे विस्तार के साथ दिया और वाणी पर हमारा ईमान खड़ा किया। आगे वाणी–मंथन तो हमको ही करना है। सरकारश्री कहते थे कि "मेरे तन को देखोगे तो नरक में जाओगे, मैं तो सुन्दरसाथ की चरणधूलि चाहता हूँ, मेरे अन्दर जो बोल रहा है उनको पहचानो"। फिर भी हम नहीं माने और गलती भी कबूल करनी नहीं? आखिर में जो होना था, वह हमारी नजर के सामने हैं।

वाहिदत परमधाम में नूरी तनों में है और एकदिली भी है। हमारी भूल है

Nijanand App

कि इन माया के तनों में हम एकदिली ढूँढते हैं। यहाँ तो अपने वजूद को लेकर केवल स्वार्थ के साथ हम जी रहे हैं। हम कहलाने वाले सरकार के और हमारा अहंकार एक दूसरे के साथ टक्कर ले रहे हैं। आज शास्त्रों और वाणी बीतक का ज्ञान लेकर जागनी करने वाले अपनी अपनी प्रतिभा उजागर करने में लगे हैं। हकीकत में सुन्दरसाथ के लिए किसी को दर्द नहीं है। हमारे हादी सरकारश्री को छोड़कर साधना से राजजी को पाने का ढोंग करने वाले खुद प्राणनाथ बन बैठे हैं। यह श्रीमुखवाणी के विपरीत है। फिर भी कहलाने वाले सरकार के आज चुप्पी साधे हुए हैं। फलस्वरूप अबोध सुन्दरसाथ अन्जाने में गुमराह हो रहे हैं और अलग अलग गुटों में बंट रहे हैं।

हकीकत में जागनी लीला में पू. सरकारश्री का तन आखिरी था, ऐसा मैं मानता हूँ। वह खुद भी कहते थे कि "मेरे पीछे कोई नहीं है"। आज हम सरकारश्री को जुदा जुदा तनों में ढूँढ रहे हैं। हकीकत में सरकारश्री तो पूरे प्रणामी सुन्दरसाथ में फैल गये हैं। उनको हम एक दायरे में नहीं बाँध सकते। महात्मा गाँधी जी ने देश को आजाद कराया और सत्य अहिंसा का संदेश दिया। आज गाँधी जी के नाम की आड़ में राजनीति खेलने वालों ने देश को आतंकवाद के हवाले कर दिया है। अगर विचार किया जाय तो गाँधीजी का संदेश पूरी दुनियाँ में फैल गया।

हमारे कुछ प्रचारक सरकारश्री से आर्शीवाद पाकर जागनी करने लगे, लेकिन वह खुद मोमिन नहीं बन पाए और रहनी में खरे नहीं उतरे और राजनीति चाणक्य बुद्धि का सहारा लेकर वाणी से उलटा चल रहे हैं। ऐसे हमारे अगुए भोले सुन्दरसाथ को कहाँ ले जायेंगे? सुन्दरसाथजी, आखिरी समय है। हमको सावधान होकर वाणी से जुटकर धनी की मेहर को पाना है।

रतनपुरी आश्रम में शुरुआत से बड़े महाराजजी श्रीरामरतनदास महाराज की स्मृति में श्री 108 पाठ पारायण होते हैं। पाठ (अखण्ड या साप्ताहिक) के साथ हमारी आस्था जुड़ी है लेकिन अखण्ड पाठ में बड़ी कठिनाई और असुविधा झेलते हुए सम्पन्न होते हैं। उसके बारे में पू. सरकारश्री कहते थे कि "अखंड पाठों के साथ उत्तर भारत के सुन्दरसाथ की भावनाएं जुड़ी हैं, पाठों के लिए सुन्दरसाथ आते हैं और इसी बहाने सुन्दरसाथ को वाणी चर्चा सुनाता हूँ, अकेली चर्चा सुनने कोई नहीं आयेगा"। राजजी बड़े मेहेरबान हैं। जिस भाव से हम रिझायेंगे वह हमारी चाहत पूरी करते हैं।

प्यारे सुन्दरसाथजी, वाणी की लज्जत लेनी हो तो समर्पित भाव से वाणी

Nijanand App

में डूबना होगा। फिर उस लज्जत के सामने माया का अहंकार और विकार की चाहत अपने आप छूट जायेगी।

सच्चाई कड़वी होती है। मैं किसी को दुःख पहुँचाना नहीं चाहता हूँ। फिर भी अनजाने में किसी को ठेस पहुँची हो, तो अपना साथी समझकर माफी चाहता हूँ।

◆ ◆ ◆ ◆

Nijanand App